भारत सरकार

जल शक्ति मंत्रालय

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 2197

जिसका उत्तर 04 जुलाई, 2019 को दिया जाना है।

.....

प्राचीन नदियों की स्थिति

2197. श्री हनुमान बैनिवाल:

क्या **जल शक्ति मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या देश में प्राचीन नदियों का अस्तित्व खतरे में है;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार के पास उक्त नदियों के पुनरुद्धार हेतु कोई कार्य योजना या नीति है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) देश में कितनी नदियों का पुनरुद्धार करके विभिन्न राज्यों की जल की कमी से निपटा जा सकता है और यदि हां, तो तत्संबंधी राज्य-वार ब्यौरा क्या है?

उत्तर

जल शक्ति और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री (श्री रतन लाल कटारिया)

(क) से (ग) भारत सरकार ने नदियों के विकास और पुनरुद्धार के लिए कई पहल की है। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन के तहत जल शक्ति मंत्रालय द्वारा गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों के संरक्षण का कार्य शुरू किया गया है। मई, 2015 में शुरू किए गए नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत गंगा और उसकी सहायक नदियों की सफाई के उद्देश्य से तैयार अलग-अलग समन्वित कार्यकलाप शुरू किए गए हैं। इनमें नगर निगम सीवेज का शोधन, औद्योगिक बहिर्स्राव, ड्रेन जैव उपचार, नदी सतह की सफाई, ग्रामीण स्वच्छता, नदी तट विकास, घाट और शवदाहगृहों का विकास, वन रोपण और जैव विविधता संरक्षण, सार्वजनिक पहुंच कार्यक्रम आदि शामिल हैं। अब तक नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत कुल 298 परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई है जिसकी अनुमानित लागत 28451.29 करोड़ रूपए हैं। 298 परियोजनाओं में से गंगा नदी और इसकी सहायक नदियों की सफाई के लिए सीवरेज शोधन अवसंचना परियोजनाओं हेतु 23,130.95 करोड़ रूपए की अनुमानित लागत से 150 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है।

नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत वितरिकाओं की सफाई के लिए भी विचार किया जा रहा है। तद्नुसार, गंगा की सहायक वितरिकाओं पर भी परियोजनाएं आवश्यकतानुसार शुरू की जा रही हैं। यमुना, काली, रामगंगा, सरयू, गोमती, दामोदर, बांका, रिसपाना, खारकई, कोसी और बूढ़ी गंडक नामक वितरिकाओं के किनारे स्थित 27 शहरों में अब तक 39 सीवरेज शोधन अवसंरचना परियोजनाएं शुरू की गई हैं।

केंद्र सरकार और संबंधित राज्य सरकारों के बीच लागत साझेदारी आधार पर केंद्र प्रायोजित राष्ट्रीय नदीनदी संरक्षण योजना स्कीम के तहत नदियों (गंगा और इसकी वितरिकाओं को छोड़कर) के पहचाने गए प्रदूषित क्षेत्रों पर विभिन्न प्रदूषण निवारण कार्य भी शुरू किए गए हैं।

*****